7-7

॥ श्रों तत्सत् ॥

गायत्री-मन्त्र

की

॥ टीका ॥

श्रीभारतधर्ममहामण्डल के उपदेशकमहाविद्यालय के
विद्वानों द्वारा सम्पादित
श्री आर्यमहिला-हितकारिणी महापरिषद् काशी
द्वारा प्रकाशित

चतुर्थ आवृत्ति

मूल्य चार आना

कलेर्गताब्दाः ५०५० विक्रमीय संवत् २००६
ईस्वी सन् १९४९

धार्मिक सज्जनों से निवेदन।

सदाचारी द्विजमात्र के अध्ययन तथा प्रचार के लिये यह टीका प्रकाशित हुई है। प्रत्येक सद्गृहस्थ, नगरों के धर्मप्रतिष्ठान और ग्रामसंगठन के सम्बन्ध से स्थापित धर्मसभाओं की प्रार्थना करने पर यह पुस्तिका विना मूल्य भेजी जा सकती है। यदि कोई धर्मप्रेमी सज्जन इस पुस्तिका को इसी रूप में छपवाकर वितरण करना चाहें तो श्रीभारतधर्ममहामण्डल को लिखने पर उनको छापने की अनुमति दी जा सकती है।

वर्णधर्म में जैसे तपःस्वाध्यायनिरत ब्राह्मणों की प्रधानता है वैसे ही वैदिक मन्त्रसमूह में गायत्री की प्रधानता है, विशेषतः गायत्रीमन्त्र हिन्दू-संस्कृतिका मूलसूत्र है और गायत्री के बिना द्विजोंका द्विजत्व भी सुरक्षित नहीं रह सकता है। इस लिये इस छोटी पुस्तिका का जितना अधिक प्रचार होगा, हिन्दूजाति तथा हिन्दुस्तान का उतना ही अधिक मंगल होगा।

निवेदक—

अवधेशप्रसाद शर्मा

श्रीभारतधर्म महामण्डल, जगतगंज, बनारस।

आवश्यक निवेदन।

सनातनधर्म के ग्रन्थ जो काशी में मिलते हैं और श्रीभारतधर्म महामण्डल, श्रीआर्यमहिलाहितकारिणी महापरिषद् तथा वाणी-पुस्तकमाला-कार्यालय द्वारा प्रकाशित हैं, उन सब पुस्तकों के मगाने का पता निम्नलिखित है। सूचीपत्र बिना मूल्य भेजा जाता है।

मैनेजर—

श्रीअन्नपूर्णा दानभण्डार,

महामण्डल भवन, जगतगंज, काशी।

ॐ तत् सत् ।

गायत्रीमन्त्र की टीका ।

प्राक्कथन ।

ब्रह्ममयी श्रीगायत्री देवी को प्रणाम करके श्रीगायत्रीमन्त्र की टीका प्रकाशित की जाती है। वर्णाश्रमशृङ्खला माननेवाले सनातनधर्मावलम्बी द्विजगृहस्थों के घर में यह पुस्तक पहुँचे और सुरक्षित रहे इस इच्छा से यह प्रकाशित की जाती है।

वेद के मंत्रों में गायत्रीमन्त्र एक बहुत ही प्रभावशाली मन्त्र है। (गायत्रीं वेदमातरम्) गायत्री वेद की माता समझी जाती है। चारों वेद और वेद की ११८० शाखाएँ भी इसको समान रूप से मानती हैं। द्विजमात्र को इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करना परम कर्तव्य है। द्विज के बालकों को यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही इसका अच्छी तरह से अभ्यास करा देना चाहिये और द्विजमात्र को इस मन्त्र का अर्थ और इसकी विशद टीका अच्छी तरह समझ कर इसके जपके द्वारा श्रीपरमात्मा की उपासना करनी चाहिये।

कलिकाल के कराल प्रभाव से आजकल के बालकों को अपने धर्म की शिक्षा दी ही नहीं जाती है। इस प्रमाद के कारण सनातनधर्मी हिन्दूसमाज दिन प्रतिदिन बहुत ही नीचे गिरता जाता है। बहुत ब्राह्मण तो ऐसे दिखाई पड़ते हैं जो गायत्रीमन्त्र का नाम तक नहीं जानते। अतः बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार कराकर पहिले ही से उनको गायत्रीमन्त्र का अर्थ यथासम्भव समझा देना चाहिये। सनातनधर्मी द्विजगृहपति का यह कर्तव्य होना चाहिये कि अपने घर में इसका प्रचार करें और अपने आस-पास के पड़ोसी ब्राह्मणों को, जो गायत्रीमन्त्र या इसका अर्थ नहीं जानते हैं, इस मन्त्र का अभ्यास करा देवें और समझा देवें कि, बिना गायत्रीमन्त्र-जप के और बिना गायत्रीमन्त्र उपा-

सना के द्विज-जाति का द्विजत्व रह ही नहीं सकता। गायत्रीहीन होने से द्विज-जाति पतित हो जाती है।

प्राचीनकाल में भारतनिवासियों की बुद्धि समाहित रहती थी, इस कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य एक ही ब्रह्मगायत्री की उपासना करते थे। गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता। जो इसकी उपासना करते हैं, उनकी यह रक्षा करती है, इसी से इसका नाम गायत्री है।

कालप्रभाव से लोगों की बुद्धि में जब वैगुण्य प्राप्त हुआ और सत्त्वगुण से हट कर रजोगुण की ओर झुकने लगी, तब ऋषियों ने यह निश्चय किया कि क्षत्रिय-वैश्यों की उपासना के लिये पृथक् गायत्री होनी चाहिये। तदनुसार क्षत्रिय-वैश्यों के लिये व्याहृतिरहित गायत्री का उपदेश करने की व्यवस्था हुई; परन्तु गायत्री की उपासना त्रिवर्ण के लिये आवश्यक ही नहीं; अनिवार्य है। गायत्री की उपासना न करनेवाला ब्राह्मण गायत्रीपतित होने से शूद्रवत् हो जाता है।

अन्य धर्मों की उपासना में श्रीभगवान् से रोटी, धन आदि सामान्य भौतिक भोग्य पदार्थों की याचना की जाती है, परन्तु आर्यलोग गायत्री-उपासना के द्वारा भगवान् से निर्मल-विशुद्ध बुद्धि चाहते हैं। इसी से आर्यों की उच्चसंस्कृति का पता लगता है। मनुष्य की बुद्धि यदि विशुद्ध रहे, तो वह महान् से महान् कार्य करता है, अपने जीवन को सफल बना सकता है।

जो ब्राह्मण गायत्रीपतित हो, अर्थात् गायत्री न जानता हो, उसके साथ तब तक रोटी व्यवहार नहीं करना चाहिये, जब तक वह प्रायश्चित्त करके गायत्री न जान ले और उसकी उपासना आरम्भ न कर दे।

वेद, सातों वैदिक दर्शनशास्त्र, पुराणशास्त्र और तन्त्रशास्त्र सभी एकवाक्य होकर वेदको अनादि और अपौरुषेय सिद्ध करते

हैं और यह बताते हैं कि, कलियुग ४३२००० वर्ष का होता है। इससे दूना द्वापरयुग, उससे दूना त्रेता और उससे दूना सत्ययुग होता है। ऐसे चारों युग मिलकर एक महायुग कहाता है। प्रत्येक हिन्दु, अपने नित्य के संकल्प में देश और कालका जो उल्लेख किया करते हैं, उसमें चतुर्दश भुवन, लोक लोकान्तर और चारयुग, महायुग मन्वन्तर और कल्पका उल्लेख करते हैं। अतः प्रत्येक हिन्दु को. इनका साधारण ज्ञान रहना चाहिये। ऊपर लिखित ७१ महायुगों का एक मन्वन्तर कहाता है। उसमें काल-राज मनु, देवराज इन्द्र आदि सब बड़े बड़े पदधारी बदल जाते हैं और उनके स्थान में नये पदधारी आ जाते हैं। इसका विस्तृत वर्णन वेद से लेकर पुराणों तक में पाया जाता है। पृथ्वी की अन्यान्य सभ्य जातियों को चौदह भुवन रूपी दैवी जगत् का कुछ भी ज्ञान नहीं है और उनका कालज्ञान तो १०-५ हजार वर्षों से आगे नहीं बढ़ा है। अतः हिन्दुजाति के साथ उन जातियों की तुलना नहीं हो सकती, यह प्रत्येक हिन्दु को ध्यान में रखना चाहिये। नित्य संकल्प में नाम लिये जाने वाले महान् देश और महान् काल का कुछ ज्ञान बालकपन में ही गायत्रीमन्त्र के साथ ही साथ करा देना चाहिए।

हिन्दू गृहस्थमात्र के बालक-बालिकाओं को प्रथम अवस्था से धर्मशिक्षा दिलाने के लिये श्रीभारतधर्म-महामण्डल ने एक अलग कार्यविभाग स्थापित किया है। उसके द्वारा धर्मशिक्षा देने की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। बहुत-सी पुस्तिकाएं इस शुभ उद्देश्य से बिना मूल्य बाँटी भी जाती हैं। इस विभाग की नियमावली आदि मंगवाकर हिन्दू गृहस्थों के गृहपतिगण लाभ उठावें, अपने तथा मित्रों के घर में धर्मशिक्षा का विस्तार करके पुण्य प्राप्त करें। और अपने समाज को अधःपतित होने से रोकें तथा श्रीभगवान् की कृपा प्राप्त करें।

गायत्रीमन्त्र ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ।

मन्त्रका सरल अर्थ ।

ॐ शब्दवाच्य निर्गुण परब्रह्म ही भूर्भुवः स्वः स्वरूप विराट्-पुरुष अथवा सगुण ईश्वर हैं। उसी स्वयं प्रकाशमान परब्रह्म की पूजनीय ज्योतिका हम ध्यान करते हैं, वही ज्योति हमारी बुद्धिको प्रेरित करे।

मन्त्र-भाष्य ।

ॐ—प्रणवमन्त्र है और ब्रह्मका प्रधान नाम है। यह ब्रह्मका स्वाभाविक नाम है क्योंकि सृष्टिके आरम्भमें ब्रह्मकी प्रकृति से ॐकार सबसे पहले आविर्भूत होता है। अनन्तर शब्द-सृष्टि और उसके पश्चात् अन्यान्य सृष्टियाँ होती हैं। सृष्टिका आदिकारण होने से इस (ॐकार) के अवलम्बन से गुणातीत ब्रह्मपद प्राप्त किया जाता है। ॐकार का जप तथा उसके अर्थकी भावना करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

वैसे तो अनन्तरूपधारी भगवान् के अनन्त नाम हैं और उनके सगुण रूप और नाना अवताररूपी राम-कृष्णादि लीला-विग्रहों के अनेक नाम स्मृति, पुराण और तन्त्रादि शास्त्रों में पाये जाते हैं, परन्तु ॐ कार की महिमा सब शास्त्रों में समानरूप से

पायी जाती है। उपासनाकाण्ड का प्रधान आश्रयरूपी योग-दर्शन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि, उस परम पुरुष परमात्मा का प्रधान वाचक प्रणव है और उसके जप तथा अर्थ का मनन करने से साधक को मुक्ति तक प्राप्त होती है। इसका कारण यह है कि, भगवान् के जितने अन्य नाम हैं, उनके भाव के अनुसार शब्द बनता है; प्रणव में ऐसा नहीं होता। दर्शनशास्त्र कहता है कि, जहाँ कार्य है, वहाँ कम्पन अवश्य होगा और जहाँ कम्पन होगा, वहाँ शब्द भी होगा। सृष्टि के प्रारम्भ में केवल अद्वितीय चिन्मय परमात्मा के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। जब सृष्टि का प्रारम्भ हुआ, तब एक अद्वितीय ब्रह्मसत्ता से उनकी प्रकृतिरूपी शक्ति प्रकट हुई, जिसको कोई शास्त्र प्रकृति कोई स्वभाव, कोई महामाया कोई शक्ति कहता है, वह शक्ति त्रिगुणमयी है। इस द्वैत-भावापन्न प्रथम अवस्था में जो कम्पन हुआ, उससे जो आदि-शब्द प्रकट हुआ, उसी का नाम प्रणव है। वह ध्वन्यात्मक और-वर्णात्मक दोनों प्रकार का है। ध्वन्यात्मक के लिये "तैलधारा-मिवाच्छिन्नं दीर्घघंटानिनादवत्" ऐसा श्रुति का वचन है। और वर्णात्मक ब्रह्माविष्णुमहेश्वरात्मक है, जिससे सब वर्णों की उत्पत्ति हुई है। वही लिखा भी जाता है। ऐसा नाम जपते जपते ध्वन्यात्मक अवस्था में साधक का अन्तःकरण पहुँच जाता है और वह प्रणव जहाँ जाकर लय होता है, उसी को "तद्विष्णोः परमं पदम्" कहते हैं।

भूर्भुवः स्वः—यह सगुणब्रह्मरूपी विराट्-पुरुषका निर्देशक मन्त्र है। भगवान् की स्थूल मूर्ति यह विराट् ब्रह्माण्ड है। इसी कारण उनकी विराट्-मूर्ति में भक्तगण उनकी व्यापक सत्ताका अनुभव करके पूजा करते हैं। भगवान् का विराट्-देह चतुर्दश भुवनमय होने पर भी उसमें भूर्भुवः स्वः इन तीन लोकों की ही प्रधानता है। चतुर्दश भुवनों में अतल, वितल, सुतल-तलातल, रसातल,

महातल, पाताल ये सात आसुरी इन्द्रियसुखमूलक अधोलोक हैं। यह नीचे के सातों लोक आर्यों के लिए सेवनीय नहीं हैं क्योंकि आसुरी सुख की इच्छा आर्य्य लोग नहीं करते हैं। सुतरां उनके लिये त्याज्य हैं। ऊपर के भूः, भुवः, स्वः, मह, जन, तपः, और सत्य इन सात लोकों में से जन, मह, तपः, और सत्य ये चार लोक अति-उन्नत एवं इन्द्रिय-सुख-भोगों से अतीत हैं। इन चार लोकों में से क्रमशः इन्द्रियसुखों से विरत व्यक्ति जनलोक में मन के ऊपर आधिपत्य करनेकी शक्ति वाले, महर्लोक में, बुद्धि पर आधिपत्य करनेवाले तपोलोक में और प्रकृति पर आधिपत्य करनेवाले व्यक्ति सत्य लोक में जाते हैं। ये चारों लोक ऐसे ही चार प्रकार के महान् आत्माओं के सेवनीय हैं और साधारण मनुष्यों की बुद्धि की धारणा से अतीत हैं। इस कारण चौदह लोकों में से नीचे के सात लोक आसुरी लोक हैं, और ऊपर के चार लोक महान् आत्माओं के लोक हैं, बाकी तीन ही लोक रह जाते हैं और वे ही ब्रह्माण्ड की व्यवस्था के लिये सर्वप्रधान हैं। अतः भूर्भुवः स्वः इन तीन लोकों की धारणा करने से ही विराट्-पुरुष की धारणा चरितार्थ हो सकती है। भूर्लोक में हमारा मृत्युलोकरूपी भारतवर्ष है जो सारी पृथ्वी का बोधक है। उसी भूर्लोक में पाप-पुण्य के नियामक भगवान् धर्मराज यमकी राजधानी है। इसके अतिरिक्त पितृ-लोक, दैवकारागाररूपी नरकलोक एवं अनेक दिव्य-लोक भी इसी में हैं। भूर्लोक और भुवर्लोक के बीच में सूर्य्य और चन्द्रमा तथा ग्रह उपग्रह एवं तारागण सभी विद्यमान हैं। भुवर्लोक की अन्तिम सीमा पर ध्रुवलोक है। इसके बाद स्वर्लोक है, जिसमें देवराज इन्द्र की राजधानी है तथा अन्यान्य बड़े-बड़े देवताओं की राजधानियाँ हैं। ये तीनों लोक ही सम्पूर्ण दैवी शृङ्खलाओं एवं दैवी अनुशासनों के स्थान होने के कारण पूजनीय

हैं और ये ही सगुण ब्रह्मके स्वरूप हैं। अतएव साधारणतः भूः भुवः और स्वः ये ही तीनों लोक विराट्-पुरुषरूपसे उपासनीय हैं।

तत्—अर्थात् वह। यह निर्गुण ब्रह्म और सगुण ईश्वर का एकत्व-वाचक मन्त्र है।

देवस्य सवितुः—अर्थात् द्योतनात्मक परब्रह्म का। परमात्मा स्वयं प्रकाशमय हैं, वे सब प्रकाशशील पदार्थों के प्रकाशक हैं और सम्पूर्ण ज्ञान के मूलाधार हैं। सूर्यदेवका प्रकाश उस स्वयं प्रकाशमय परमात्माका स्थूल प्रतीक (नमूना) है, इसी कारण इस मन्त्र में "सवितुः" शब्दका प्रयोग हुआ है।

वरेण्यं भर्गः—अर्थात् पूजनीय ज्योति। भगवान् की ज्ञान-प्रकाशिका ज्योति की ही सब स्थानों में उपासना होती है। स्थूल-राज्य में अवतार, गुरु, राजा, माता, पिता आदि विभूतियों की उपासना और सूक्ष्म-राज्य में देव-देवियों की उपासना, ये सभी ब्रह्मज्योति की ही उपासनाएं हैं। जो कोई जिस किसी की उपासना करेगा, वह उसी ज्योति की कला अथवा अंश की उपासना करेगा, इसी कारण वही ज्योति साधक के लिए वरेण्य और उपासनीय है।

धीमहि—अर्थात् ध्यान करते हैं। जहाँ ध्याता ध्यान तथा ध्येय मात्र विद्यमान हैं और कुछ भी नहीं है, चित्त की उसी अवस्था का नाम ध्यान है। इस क्रिया-पद के द्वारा ध्यान की आवश्यकता बतलायी गयी है।

यः नः धियः प्रचोदयात्—अर्थात वही ज्योति-स्वरूप ब्रह्म हमारी बुद्धि को प्रेरित करें। प्रत्येक जीव का बुद्धितत्त्व ही चिन्मय ब्रह्म की साक्षात् विभूति है। एक ओर बुद्धि परमात्मा के स्वस्वरूप की उपलब्धि कराती है और दूसरी ओर वही बुद्धि

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की यथार्थ रूप से प्राप्ति कराती है, इस कारण बुद्धि सर्वशक्तिमान् ईश्वर के द्वारा प्रेरित हो, ऐसी प्रार्थना की गई है।

ॐकार इस मन्त्र में जो द्वितीय बार व्यवहृत हुआ है इसका कारण यह है कि प्रणवमन्त्र सब मन्त्रों का सेतु स्वरूप है। सेतु जिस प्रकार मार्ग को विपद्रहित और सुगम कर देता है उसी प्रकार प्रणव भी भक्तों के मनोभाव को उपास्यदेव के चरणों में पहुँचाने में सहायता करता है। ॐकार में असाधारण क्रियाशक्ति और दैवी शक्ति है।

गायत्री मन्त्रोपासकों के लिये कतिपय जानने योग्य विषय।

वेद के तीन काण्ड हैं—कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड। कर्मकाण्ड का यह लक्ष्य है कि, जगत् ही ब्रह्म है। उपासनाकाण्ड का यह मुख्य लक्ष्य है कि, ब्रह्म ही जगत् है और ज्ञानकाण्ड का यह लक्ष्य है कि, एकमात्र ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अतः मैं ही ब्रह्म हूँ। ऐसे ब्रह्मभाव की प्राप्ति के लिये ब्रह्मोपासना के द्वारस्वरूप गायत्री की उपासना है।

सब वैदिक दर्शनों का निष्कर्ष यह है कि, अन्तःकरण ही विश्वका माध्यम है। जो साधक अपने अन्तःकरण को वशीभूत कर लेता है, वह साधकश्रेष्ठ चतुर्दश भुवनरूपी ब्रह्माण्ड के सब लोकों में अपने अन्तःकरण को पहुँचा सकता है और लाभ उठा सकता है। इसका प्रमाण लययोगसंहिता और राजयोग-संहिता तथा (श्रीदत्तात्रेय दर्शनादर्श) नामक ग्रन्थ में भली भाँति पाया जाता है। वेद और शास्त्रोंका यह तात्पर्य है कि, धर्म के आधाररूपी परमात्मा और विश्व की धारणकरनेवाली धर्मशक्ति,

इन दोनों में भेद नहीं है। इस कारण प्रत्येक ऐहलौकिक और पारलौकिक कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को नियमित धर्मसाधन करने की ओर प्रवृत्ति रखनी चाहिये। हिन्दूधर्म के सोलह अङ्ग हैं, इस कारण हिन्दूधर्म सोलह कलाओं से परिपूर्ण है। हिन्दूधर्म के सोलह अंगों का विस्तृत वर्णन 'हिन्दूधर्म का स्वरूप' नामक पुस्तक में है, जिसे हिन्दूमात्र को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिये।

× × ×

हिन्दू धर्म के सोलह अंगों में से रज और वीर्य की शुद्धिमूलक वर्णधर्म आर्यपुरुषों के लिये परम आवश्यक है और आर्यमहिलाओं के लिये एकपतिनिष्ठारूपी सतीत्वधर्म का पालन करना सर्वोपरि माना गया है। इन्हीं दोनों के कारण आर्यजाति करोड़ों वर्षों से जीवित है और अनन्तकाल तक जीवित रहेगी। अतः प्रत्येक आर्यपुरुष और आर्यमहिला को अपने जातिगौरव के विचार से इस सिद्धान्त को सदा स्मरण रखना चाहिये।

× × ×

जैसे आर्य महिलाओं के महत्त्व की रक्षा के लिये सतीधर्म माननीय है, जैसे आर्य पुरुषों के महत्त्व की रक्षा के लिये जन्म से जाति मानकर रजोवीर्य की शुद्धि को महत्त्व देने की आवश्यकता है, वैसे ही ब्रह्मवाचक भगवान् के नाम के विषय में प्रणव का महत्त्व और उपासना के विषय में गायत्रीमंत्र की उपासना का महत्त्व सर्वोपरि है।

× × ×

हिन्दू धर्म में विश्व के मनुष्यमात्र को पूज्य बुद्धि से देखने की आज्ञा है। इस कारण घर पर आये हुए अतिथि को भगवद्रूप समझना चाहिये और इसी कारण पंच महायज्ञ की इतनी महिमा है। पंचमहायज्ञ का अनुष्ठान प्रत्येक गृहस्थ को करना चाहिये।

——

शास्त्रीय ग्रन्थ-मालाएँ ।

शास्त्रीय दो पुस्तकमालाएँ नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। जिनमें एक का नाम श्रीसूर्यग्रन्थमाला और दूसरे का नाम श्रीदत्तात्रेयग्रन्थमाला है। दूसरी दत्तात्रेय ग्रन्थमाला में वैदिक सात दर्शन यथाक्रम प्रकाशित हो रहे हैं और प्रत्येक दर्शन-शास्त्र की विस्तृत भूमिका और उसकी सरल संस्कृत वृत्ति रहेगी, साथ ही साथ उस संस्कृत वृत्ति का राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरल अनुवाद रहेगा। इस ग्रन्थ-माला में सप्त दर्शनों के अधिकारों का क्रम समझाने के लिये और न्यायदर्शन, वैशेषिक दर्शन, योग दर्शन, सांख्य दर्शन, श्री भरद्वाजकृत कर्ममीमांसा दर्शन (पूर्वार्द्ध), श्री जैमिनिकृत मीमांसादर्शन (उत्तरार्द्ध) दैवीमीमांसादर्शन और ब्रह्ममीमांसादर्शन (वेदान्त) का परस्पर संबन्ध और दार्शनिक रहस्य प्रकाशित करने के लिये श्रीदत्तात्रेय दर्शनादर्श नामक स्वतन्त्र संस्कृत-ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थमालामें वैदिक दर्शन के और भी उपयोगी ग्रन्थ तथा विस्तृत भाष्य आदि ग्रन्थ भी क्रमशः प्रकाशित होंगे। इस श्रीदत्तात्रेय ग्रन्थमाला का आकार डबल क्राउन १६ पेजी है, और श्रीसूर्य-ग्रन्थमालामें इस समय श्रीदत्तात्रेयधर्ममीमांसा नामक एक वृहत् धर्मग्रन्थ संस्कृत में हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो रहा है। जिसमें सनातनधर्म की जानने योग्य सभी बातें हैं। इसके प्रथम स्कन्ध में १० अध्याय दूसरे स्कन्ध में १६ अध्याय और तीसरे स्कन्ध में ५० अध्याय हैं। यह श्रीदत्तात्रेयधर्ममीमांसा नामक ग्रन्थ आज तक निर्णयसिंधु, धर्मसिंधु आदि धर्ममीमांसा के जितने निबन्ध ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, उन सबों से बहुत वृहत् है और इसमें कोई भी विषय छूटा नहीं है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त इस ग्रन्थमाला में अंग्रेजी भाषा के धर्मग्रन्थ और हिन्दी भाषा में जो धर्म ग्रन्थ हैं, वे सब नियमित प्रकाशित होंगे। जिससे

मनुष्यजाति का बहुत उपकार होगा। श्रीसूर्यग्रन्थमाला डबल क्राउन ८ पेजी साइज में छप रही है। जिन्हें ये ग्रन्थमालाए लेनी हों "कार्याध्यक्ष श्री भारतधर्म महामण्डल, जगतगंज, बनारस कैन्ट" से पत्र व्यवहार करें।

संस्कृत भाषा में जो मुख्य ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं और हो रहे हैं, उनके नाम निम्नलिखित हैं।

न्यायदर्शन सरल संस्कृतवृत्तिसहित), वैशेषिकदर्शन (सरल संस्कृतवृत्तिसहित), योगदर्शन (सरल-संस्कृतवृत्तिसहित), सांख्यदर्शन (सरल संस्कृत वृत्ति और हिन्दीभाषा सहित) श्रीभरद्वाज कर्ममीमांसा दर्शन (सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाष्य-सहित) श्रीजैमिनीय कर्ममीमांसादर्शन (सरल संस्कृत वृत्ति सहित), दैवीमीमांसादर्शन, जो वेद के उपासनाकाण्ड की मीमांसा है (सरल संस्कृतवृत्ति विस्तृत संस्कृत भाष्य और हिन्दी भाष्य सहित), वेदान्तदर्शन अर्थात् ब्रह्ममीमांसादर्शन, जिनके अनेक भाष्य प्रचलित हैं तो भी उसका एक समन्वय भाष्य बना है। श्रीशम्भुगीता (हिन्दी अनुवादसहित), श्रीविष्णुगीता (हिन्दी अनुवाद सहित) श्रीशक्तिगीता (हिन्दी अनुवादसहित), श्रीधीश-गीता (हिन्दी अनुवाद सहित), श्रीसूर्यगीता (हिन्दी अनुवाद सहित), श्रीगुरुगीता (हिन्दी अनुवाद सहित) संन्यासगीता (हिन्दी अनुवाद सहित) सब श्रेणी के संन्यासियों के उपकारार्थ, श्रीसंन्यास धर्मपद्धति। योगमार्गके उपयोगी ग्रन्थ-मन्त्रयोगसंहिता, हठयोगसंहिता, लययोगसंहिता, राजयोगसंहिता, श्रीमधुसूदनसंहिता पुराण समझने के लिये, पुराणरहस्य कर्मकाण्ड समझने के लिये, श्रीदत्तात्रेयदर्शनादर्श, धर्म के सार्वभौम रूपको और उसके विस्तृत अङ्गों को समझने के लिये, श्रीदत्तात्रेय धर्ममीमांसा, ये सब ग्रन्थ संस्कृत में हैं।

सनातनधर्म के अपूर्व ग्रन्थ।

धर्म विज्ञान—यह सनातनधर्म के मर्म को बतानेवाला अपूर्व ग्रन्थ है। मूल्य—प्रथम भाग ५), द्वितीय भाग ४), तृतीय भाग ४) है। डाकव्यय पृथक्।

गीतार्थचन्द्रिका—समस्त श्लोकों का सरल अर्थ और गूढ़ तात्पर्य है। मूल्य २॥) सजिल्द ३) डाकव्यय पृथक्।

संन्यास धर्मपद्धति— मूल्य १॥) रु०।

भारतवर्ष का इतिवृत्त—इस ग्रन्थ में प्राचीन भारत का इतिहास वर्णित है। मूल्य ३) रु०।

धर्मकल्पद्रुम ८ खंड	२२॥)
प्रवीण दृष्टि में नवीन भारत प्रत्येक खण्ड	३)
नवीन दृष्टि में प्रवीण भारत	१।)
शास्त्र चन्द्रिका	२।)
साधन चन्द्रिका	२॥=)
धर्मचन्द्रिका	१॥)
आर्यगौरव	।॥)
आचारचन्द्रिका	॥।)
नीतिचन्द्रिका	॥।)
सनातनधर्म दीपिका	१=)
चरित्रचन्द्रिका प्रथमभाग	१॥)
दूसरा	१॥।=)
धर्मप्रश्नोत्तरी	।=)
कहावतरत्नाकर	१०॥)
कर्मरहस्य	॥।
कुमारिल भट्ट	१॥)
श्रीव्यासशुकसम्वाद	।=)
दुर्गासप्तशती भाषा टीका	१॥)
सजिल्द	१॥।=)
धर्मा-धर्म प्रश्नोत्तरी	—)॥
सदाचार प्रश्नोत्तरी	=)
तीर्थ और देवपूजन प्रश्नोत्तरी	—)॥
महिला प्रश्नोत्तरी	—)॥
परलोक प्रश्नोत्तरी	—)॥
पूजा और प्रार्थना	≡)॥।
हिन्दू धर्म का स्वरूप	=)
गायत्री मंत्र की टीका	।)

अन्यान्य पुस्तकें

तुलसीकृत रामायणका [बंगला अनुवाद]		६)
आदर्श जीवन संग्रह		२।)
त्रिवेदीय सन्ध्या		॥—)
भूदेवचरितम्		२।)
पारिवारिक प्रबन्ध (बँगला)		१॥)
आचार प्रबन्ध (बँगला)		१॥)
गोरक्षा	”	॥—)
भक्तितत्त्व	”	१॥)
महर्षिचरित	”	१॥)
अगस्त्य चरित्र	”	॥।)
सांख्यरहस्य	”	१=)
योगरहस्य	”	॥।≡)
वैशेषिकरहस्य	”	१=)
न्यायरहस्य	”	१=)

पुराण तत्त्व ,,	१॥-)
जन्मान्तर तत्त्व ,,	१=)
साधनतत्त्व (बँगला)	१॥)
अवतार तत्त्व ,,	३)
हितोपदेश ,,	३)
नारीधर्म ,,	१॥)
सदाचार-शिक्षा ,,	।॥)
नीतिशिक्षा	।॥)
धर्मकर्म दीपिका	।॥)
धर्मसोपान	।=)
मंत्रयोग संहिता	१॥)
हठयोग संहिता	१=)
तत्त्वबोध	।=)
परलोक रहस्य	।=)
चतुर्दश लोक रहस्य	।=)
सतीचरित्र चन्द्रिका	३)
नित्यकर्म चन्द्रिका	।=)
सदाचार सोपान	=)
कन्याशिक्षा सोपान	=)
ब्रह्मचर्य सोपान	।=)
राजशिक्षा सोपान	।)
साधन सोपान	।=)
शास्त्रसोपान	।=)
धर्मप्रचार सोपान	।=)
उपदेश पारिजात	।॥)
स्तोत्रकुसुमाञ्जलि	।=)
दैवीमीमांसादर्शन (हिन्दी)	२।)
संगीत सुधाकर	॥-)
पुराण रहस्य	२।)
गो-व्रत-तीर्थ महिमा	।॥)
व्रतोत्सव चन्द्रिका	३)
सुगमसाधन चन्द्रिका	=)
धर्मसुधाकर	३)
श्री मधुसूदन संहिता	२।)

वाणीपुस्तकमाला के धर्म ग्रन्थ

भारतधर्म समन्वय	१=)
धर्मतत्त्व	१=)
धर्मप्रवेशिका	।=)
वेदान्तदर्शन चतुःसूत्री (अपूर्वभाष्य सहित)	॥-)
व्रतोत्सव कौमुदी	॥-)
सतीसदाचार	।॥)
ईशोपनिषत्	।॥)
केनोपनिषत्	।॥)
कठोपनिषत्	३)
मार्कण्डेयपुराण(हिन्दी)प्रतिभाग	१॥)
आदर्शदेवियाँ दो भाग प्रतिभाग	१।-)
कर्मरहस्य	।॥≡)
परलोकतत्त्व	।॥)

पुस्तक मिलने का पता—मैनेजर श्री अन्नपूर्णा दानभण्डार,
महामण्डल भवन, जगतगंज बनारसकैंट ।

अखिल भारतीय-धार्मिकाध्यात्मिक

संस्कृत-विश्वविद्यालय।

संसार में आजकल जो घोर अशान्ति फैली हुई है इसका कारण धर्मशिक्षा का अभाव ही है। गत अर्धशताब्दी से इस सत्य का अनुभव प्राप्त करके श्रीभारतधर्ममहामण्डलने इस धार्मिकाध्यात्मिक संस्कृत-विश्वविद्यालय की स्थापना की है, इसके द्वारा काशी में तथा भारत के विभिन्न स्थानों में धार्मिक परीक्षायें ली जाती हैं। लोग अपने-अपने स्थानों में रहकर भी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकते हैं। परीक्षाकेन्द्रों का खर्च प्रधान कार्यालय से मिलता है। इसी प्रकार स्त्रियों में धर्मशिक्षा-प्रचार के निमित्त आर्यमहिला-हितकारिणी महापरिषद् द्वारा संचालित धर्मसेविका-विद्यापीठ बहुत कुछ कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय के नियमादि जानने के लिये भारतधर्म महामण्डल से और धर्मसेविका विद्यापीठ के लिये आर्यमहिला हितकारिणी महापरिषद् से पत्र-व्यवहार कीजिये।

सामयिकपत्र।

अखिल भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से निकलनेवाला सूर्योदय एकमात्र संस्कृत मासिक पत्र है। इसके अतिरिक्त सूर्योदय का हिन्दी विशेष और बड़ा संस्करण प्रति तीन मास में प्रकाशित होता है। आर्यमहिला महापरिषद् के द्वारा (आर्यमहिला) नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है जो स्त्रीशिक्षा के लिये अति उपयोगी है।

महामण्डल भवन, जगतगंज, बनारस कैंट।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस।